02 / 06 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ब्राह्मण सो देवता का अनुभवी बनना

➢➢ मैं संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा हूं

➳ _ ➳ अपने श्रेष्ठ भाग्य को और श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले भाग्य विधाता को निहारती

→ अपने नये अलौकिक जन्म के रुहानी नशे मे झूमती

→ मन में खुशी का डांस करती

→ मैं ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण आत्मा हूं

- पदमापदम भाग्यशाली हूं

→ ब्रह्मा के आचरण पर चलने वाली आत्मा हूं

→ मैं आत्मा ऊंचे ते ऊंचे बाप की संतान हूं

- ऊंचे ते ऊंचा समय है
- स्वयं भगवान साथ है

→ मैं ब्राह्मण आत्मा ऊंचे ते ऊंचे धर्म कर्म और परिवार की हूं

→ संगमयुग पर स्वयं भगवान हम ब्राह्मण बच्चों की महिमा करते है

- वाह वाह मेरे प्यारे मीठे सिकीलधे बच्चे वाह

→ ब्राह्मण देवताओं से भी ऊंच है

- क्योकि डायरेक्ट भगवान की पालना

→ इसलिए ब्राह्मणों का स्थान चोटी पर दिखाते है

- चोटी वाले अर्थात ऊंची स्थिति मे रहने वाले

→ मैं सत्य बाप का सत्य परिचय देने वाली ब्राह्मण आत्मा हूं

→ मैं ब्राह्मण आत्मा कल्प वृक्ष की जड़ों मे बैठी हूं

→ मैं आदि सनातन धर्म की आत्मा हूं

→ कल्प वृक्ष का बीज शिव बाबा है ऊपर

→ मैं आत्मा आदि देव की आदि रचना हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा पूर्वज हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा इष्ट देव/देवी हूं

→ शिव बाबा से निरंतर गुणों और सर्व शक्तियों की किरणें प्रवाहित हो रही है

→ मुझ आत्मा में समाती जा रही है

→ मैं आत्मा कल्प वृक्ष की एक एक शाखा

→ एक एक पते को सुख, शांति, पवित्रता और शक्ति से सम्पन्न किरणें प्रदान कर रही हूं

→ ये किरणें विश्व की आत्माओं को असीम शांति व आनन्द की अनुभूति करा रही हैं

→ सर्व आत्मायें दुख पीडा अशांति से मुक्त अनुभव कर रही है

→ पांचों विकारों को विदाई दे रहे हैं

- वायुमंडल शुद्ध होता जा रहा है

→ प्रकृति के पांचो तत्व पावन होते जा रहे है

→ आत्मायें अपने इष्ट पालनहार की इंतजार में आंखे बिछाये बैठी हैं

→ उनकी आंखे बस मेरी ओर ही

- मन खुशी से नाच रहा है
- आंखो मे एक चमक
- चेहरे पर खुशी दिखाई दे रही है

→ उनकी मनोकामनाएं पूरी हो रही है

→ अपने इष्ट देव के दर्शन से प्रसन्न हो रहे है

- जैसे सब कुछ पा लिया हो

→ शुकिया बाबा आपने मुझ साधारण आत्मा को ये नया अलौकिक स्वरुप दिया

→ ब्राह्मण सो देवता स्वरुप का अनुभवी बनाया